E-Learning Study Material

By Prof (Dr) Yadwendra Singh
MAHARAJA COLLEGE, Ara
VKS UNIVERSITY, ARA, BIHAR

B. A. Part TWO Economics Hons
Paper Third

Organisational Causes of Low Productivity of Indian Agricultural :-

(ii) पुराने औजारों का प्रयोग :- भारत में हल बैल तथा सिंचाई, बोआई, कटाई इत्यादि में पुराने औजारों का प्रयोग किया जाता है। यहाँ ट्रैक्टर तथा खेती के नये एवं वैज्ञानिक उपकरणों का प्राय: बहुत कम प्रयोग होता है जबकि विकसित देशों में खेती के नये एवं वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोग से कृषि की उपज में काफी वृद्धि हुई है। लेकिन भारत में अभी भी पुराने औजार के प्रयोग के फलस्वरूप उपज कम होती है।

(iii) सिंचाई की सुविधाओं का अभाव :- हमारे देश में सिंचाई के साधनों का अभी भी समुचित विकास नहीं हो पाया है जिससे जिसका प्रतिकूल प्रभाव कृषि उत्पादन पर पड़ता है।

(iv) उन्नत बीजों की कमी :- भारत में उन्नत बीजों की बहुत कमी है। खेती के पुराने किस्म के साथ घटिया बीजों का प्रयोग होता है जिससे फसल बहुत कम होती है। देश में हरित क्रान्ति के साथ अधिक उपज देने वाली उन्नत किस्मों (HYV) का अविष्कार हुआ है लेकिन हमारे यहाँ इनका व्यापक प्रयोग नहीं हो रहा है।

(v) उत्तम खाद का अभाव :- कृषि की अधिक उपज मुख्यतः उत्तम खाद पर निर्भर करती है। लेकिन यहाँ उत्तम खाद का अभाव है। यहाँ नये किस्म के तथा रासायनिक खाद उपलब्ध होने के बाद भी गरीबी के कारण अधिकांश किसान उनका प्रयोग नहीं कर पाते हैं। वैसे तो गोबर का खाद बहुत उत्तम होता है लेकिन जलावन के रूप में इसका अधिकांश भाग बर्बाद कर दिया जाता है।

(vi) कृषि पर जनसंख्या की अत्यधिक निर्भरता :- भारत में करीब 70 प्रतिशत जनता अपनी आजिविका के लिए कृषि पर ~~आश्रित~~ निर्भर है जिससे कृषि के क्षेत्र में बेरोजगारी एवं छुपी हुई बेरोजगारी की समस्या विद्यमान है जिसका प्रतिकूल प्रभाव उत्पादकता पर पड़ता है।

(C) संगठनात्मक कारण (Organisational Causes) :- भारतीय कृषि की कम उपज के निम्नलिखित संगठनात्मक कारण उत्तरदायी है :-

1. जोतों का उपविभाजन एवं अपखण्डन :- भारत में जनसंख्या के दबाव के कारण जोतों का अत्यधिक उपविभाजन एवं अपखण्डन होता चला जा रहा है। आज जमीन प्रायः छोटे छोटे टुकड़ों में बँट हुई तथा एक ही व्यक्ति की जमीन कई स्थानों में बिखरी पड़ी है जिससे खेती कार्य में परेशानी होती है और उत्पादन भी कम होता है।

2. पूँजी की कमी :- भारत के अधिकांश किसान काफी गरीब हैं। उनकी आमदनी उनके भरण-पोषण के लिए भी पर्याप्त नहीं होती जिससे उनके पास पूँजी की कमी होती है। वे सर्वदा ऋण के बोझ से दबे रहते हैं। भारतीय किसान जन्म से मृत्यु तक महाजनों के जंजाल में फँसे रहते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि भारतीय किसान कर्ज में जन्म लेता कर्ज में पलता है और बाद की पीढ़ी पर कर्ज का भार छोड़ कर कर्ज में ही मर जाता है।

3. कृषि बाजार की दोषपूर्ण व्यवस्था के कारण कृषि उत्पादों का उचित मूल्य नहीं मिलने से कृषि प्रभावित होती है और उपज कम हो जाता है।

4. दोषपूर्ण भूमि व्यवस्था भूमिपतियों के पास भूमि का अधिक होना, भूमि हीनों की फौज का होना, कृषि से जुड़े सहायक उद्योग-धंधों का नहीं होना, किसानों की अशिक्षा एवं रूढ़िवादिता, इनके अलावे किसानों की कम कार्यक्षमता इत्यादि कारणों के फलस्वरूप कृषि उपज कम होती है और अन्य विकसित देशों की तुलना में यहाँ की कृषि काफी पिछड़ी हुई अवस्था में है।